ब. इतिहास :–

डिस्ट्रिक्ट गजेटियर एवं सुंधा पर्वत पर स्थित शिलालेख के अनुसार इस प्राचीन नगर का नाम सत्यपुर था। एक क्विदन्ती के अनुसार यहां के शा चोर होने से इस नगर का नाम सांचौर पड़ा परन्तु यह वार्ता आधारहीन एवं कपोल कल्पित है। एक धारणा के अनुसार एक साधु के अभिशाप से इसका नाम सांचौर हुआ। इस नगर ने अनेक उतार चढाव देखें है। वि. सं. 1081 में मोहम्मद गजनवी ने सोमनाथ के जग प्रसिद्व मंदिर को लूटकर सांचौर से होते हुए सिन्ध की तरफ प्रथान किया। उस समय मलेश आतियामी सैनिकों ने इस नगर में लूट मचायी। उस समय यहां के मंदिरों की सुरक्षा न हो सकी। आक्रमणकारियों ने नगर को ध्वस्त किया। हजारों सुरवीरों ने अपना सर्वस्व तैयार कर नगर की अस्मिता बचाने का अथक प्रयास किया। उस समय यहां के पौरवाल श्रेष्ठि एवं साँचौहरा ब्राहम्ण अन्यत्र बस गयें। तदन्तर जैन धर्मावलम्बी ओसवाल यहां बसे एवं यह जैनों का प्रसिद्व तीर्थ स्थल बन गया।

जैन प्रभासूरीकृत ''जैन तीर्थ कल्प '' के अनुसार ईस्वी संवत् 1367 में अलाउद्वीन खिलजी गुजरात से सांचौर की तरफ आया। उस समय उसकी विशाल सेना के साथ यहां के बहादुर सैनिकों एवं नागरिकों ने भयंकर युद्व किया। अपने ईष्ठ देवों की रक्षा के लिये क्षत्रियों के साथ हजारों ब्राहम्णों ने भी अपना बलिदान दिया। खिलजी ने गांव के भव्य मंदिरों एवं मर्तियों को ध्वस्त करवाया। सिद्वेश्पर में स्थित सती दाक्षायणी की दिव्य प्रतिमा एवं लक्ष्मीनारायण मंदिर में स्थित विशाल शिवलिंग उस आक्रमण की कहानी कह रहे है। भगवान महावीर की अद्वभूत प्रतिमा को अपने साथ दिल्ली ले गया। विजय उपरान्त खिलजी ने इस नगर का नाम '' महमुदाबाद '' रखा। जिसका शिलालेख आज भी जामामंस्जिद मे स्थित है। परन्तु यह नाम अल्प समय तक ही रहां। तदन्तर गुजरात के शासक मोहम्मद बेगड़ा ने भी यहां आक्रमण किया। लेकिन उसका प्रभूत्व भी अल्प समय तक रहा।

उसके बाद अनेक आक्रमणों का सामना करते हुए इसका अधिकार चौहानों के पास आ गया। तदुपरान्त बादशाह जहांगीर ने जोधपुर महाराज श्री शुरवीरसिंह को इसकी जागीरी सौपी। परन्तु यह लम्बे समय तक नही चली। विक्रम संवत् 1737 में औरंगजेब से फतहखां को सुपर्द किया। लेकिन विक्रम संवत् 1755 में जालौर के पठानों ने इसे जीतकर अपने कब्जे में ले लिया। तदन्तर तत्कालीन जोधपुर महाराज अजीतसिंह ने इसे पठानों से छिनकर अपने राज्य में मिला दिया। एवं स्वतंत्रता प्राप्ति तक यह नगर जोधपुर राज्य में रहा। वर्तमान में यह नगर तहसील मुख्यालय है। इस क्षेत्र की कांकरेज नस्ल की गाय भारत भर में विख्यात है। इस नगर की जनसंख्या लगभग 40 हजार है। इसमें सभी जातियों के लोग निवास करते है लेकिन जैनों के सर्वाधिक 700 धर है। तहसील स्तर के सभी कार्यालय यहां कार्यरत है। नगर के जैनों के गोडी पार्श्वनाथ एवं महावीर स्वामी के भव्य मंदिर है यहां अनेकों तीर्थ यात्री दर्शनार्थ आते है। इतना ही नही फुलमुक्तेश्वर महादेव, लक्ष्मीनारायण एवं शोभालेश्वर के मंदिर भी नगर की शोभा में वृद्वि करते हैं बालक–बालिकाओं हेतु नगर में विद्यालयों की समुचित व्यवस्था है। छात्राओं कें लिये उच्च माध्यमिक तक विद्यालय है। छात्रों कें लिये उच्च माध्यमिक विद्यालय है। इस विद्यालय में कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं व्यावसायिक वर्ग के विभिन्न विषयों का अध्ययन करवाया जाता है। नगर के प्रबुद्व नागरिकों के द्वारा कॉलेज खुलवाने की लम्बे समय से मांग की जा रही है। जिससे उच्च शिक्षा हेतु विद्यार्थीयों

को अन्यत्र न जाना पड़ें। वर्तमान में नगर में निजी कॉलेजों द्वार विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा दी जा रही है।

यातायात एवं सुविधा :–नगर में विद्युत एवं जलापूर्ति का भी पर्याप्त प्रबंध है। वर्तमान में नगर में सड़कों का सुन्दर डामरीकरण हुआ है। जिससे नगर की शोभा में वृद्वि हुई है।

नगर में चिकित्सा की भी सुन्दर व्यवस्था है। विशेषकर पिछले 3 वर्षो से कार्यरत मेहता चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र में रोगियों के लिये अनेक प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध है जिससे गरीब जनता को ईलाज करवाने हेतु गुजरात की तरफ मुंह नही करना पडता। इस अस्पताल में अनेक विशेषज्ञ एवं अनुभवी डाक्टर लोगों की सेवा कर रहे है।

इस नगर के आस–पास कोई बड़ा नगर न होने से यह इस क्षेत्र का प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र है। यहां के वणिकों ने भारत भर में अपना व्यावसाय फैलाने अपनी विशेष कामयाबी हासिल की है। जालौर जिले का यह प्रसिद्व नगर अपने क्षेत्र में नवगठित 33 पंचायतों एवं 105 गांवों के विशाल भू–भाग को समेटे हुए है। क्षेत्र जनसंख्या एवं भू–भाग की दृष्टि से यह तहसील जालौर जिले की सबसे बड़ी तहसील है। इस तहसील में सांचौर कें अलावा हाडेचा नगरे, चितलवाना एवं झाब इत्यादि बड़े–बड़े गांव है। वर्तमान में चितलवाला तहसील को उपखण्ड स्तर का दर्जा दिया गया है। गांवों मे आने जाने हेतु पर्याप्त सड़कें है। निजी बसों से लोग तहसील मुख्यालय एवं अन्य स्थानों को आते जाते है। चितलवाना,झाब, हाडेचा आदि गांव डामर सड़कों से जुड़े हुए है। तहसील में शांति एवं सुरक्षा व्यवसाी हेतु सांचौर कें अलावा सरवाना, झाब, चितलवाना में पुलिस थाने है। यह क्षेत्र लुनी, सुकड़ी एवं बाडी नदी को संगम क्षेत्र होने से नेहड़ के रुप में सम्पूर्ण राजस्थान में जाना जाता है। जब भी नदी में पानी आता है उस समय तहसील के इस क्षेत्र में गेंहू एवं रायड़ा की अच्छी फसल होती है।

'' सांचौर प्राचीन काल से, वैभव में विख्यात।
धवल कीर्ति पाई है, प्रभू कृपा बरसात।।
प्रभू कृपा बरसात, पावन अद्वभूत होती।
धन धान्य से परिपूर्ण, मिलते मधुमय मोती।।
व्यापक यहां के वणिक, भारत में ठौर–ठौर।
जालौर का जगमग, नगर यह सांचौर।। ''